लाहौर में भगत सिंह चौक प्रस्ताव रद्द

लेकिन सरहद के पार लोगों के दिलों में उमड़ते प्यार को सलाम : ज्योति संग

बहरहाल भगत सिंह चौराहे का रद्द होना एक ऐसी घटना है जिस पर यकीनन दोस्ती, मुहब्बत, पड़ोस, कुरबानी, शहादत और दरयादिली जैसे लफ़्ज़ों पर यकीन रखने वाले हिन्दुस्तानी या पाकिस्तानी आवाम का एक अलग सकारात्मक नज़रिया होगा जबकि कट्टर, मुत्तअहसब, फ़िरकापरस्त और खुदगर्ज़ लोगों के ख्याल इनसे बिल्कुल जुदा और इन्सानी कीमतों की खिलाफ्त से लबरेज़ होंगे। हिन्दुस्तान का आम आदमी पाकिस्तानी आवाम के जज़्बे और अहसास का पूरी तरह से अहतराम करता है, जिन्होंने शादमान चौक को शहीद भगत सिंह नाम देने की पेशकश को सिर-आँखों पर लिया। मुट्ठी भर कट्टरपंथियों और गैर इन्सानी ताकतों की मुख़ालफ़्त, हज़ारों लोंगों के दिलों से निकले हुए मुहब्बत के पैगाम को बेमायना और बेअसर नहीं कर सकते। सरहद के इस पार से हम न सिर्फ़ इन्सानियत से मुहब्बत करने वाले करोड़ों दिलों को मुबारकबाद देते हैं बल्कि सरहद के दोनों तरफसरगरम मुत्तअसब फ़िरकापरस्तों के विरोध में बढ़-चढ़ कर आवाज़ बुलंद करने और उनकी मुसलसल-मुख़ालफ्त करने का अहद करते हैं।

पिछले साल शहीद-ए-आज़म भगत सिंह जयन्ति के मौके पर, 28 सितंबर 2011 के दिन लाहौर के ज़िला प्रशासन प्रमुख जनाब नूरुल अमीन मैंगल ने लाहौर के सी.डी.जी.एल. (सिटी डिस्ट्रिक्ट गवर्नमेंट लाहौर) को शादमान चौक का नाम बदलकर भगत सिंह चौक रखने का आदेश दिया था। उन्होंने अधिकारियों को लिखित आदेश दिया कि बहुत जल्द ही वहां पर भगत सिंह चौक का बाकायदा बोर्ड लगाया जाए। इससे पहले इस जगह पर शहीद भगत सिंह की 105वीं जयंति मनाई गई थी, जिसमें मुंबई प्रेस क्लब के नुमायंदों और स्थानीय निवासियों ने बड़े उत्साह के साथ हिस्सा लिया था। यह वो जगह है जहां लाहौर सैन्ट्रल जेल हुआ करती थी और 23 मार्च 1931 की मनहूस शाम 7.33 बजे भगत सिंह राजगुरु और सुखदेव को फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया था। सन् 1961 में इस सैन्ट्रल जेल को गिराकर एक कालोनी को बसाया गया जिसका नाम शादमान कालोनी है। यहां का शादमान चौक भगत सिंह और उनके साथियों का शहीदी मुकाम है।

जहां एक ओर पाकिस्तान के आवाम ने सरकार के इस फैसले की दिल से तारीफ़ की, वहीं पर कुछ नाम-निहाद कट्टर संगठनों ने इस फैसले की मुख़ालफ़्त करके माहौल में कुछ तनाव पैदा करने की कोशिश की। जैसा कि सभी लोग जानते हैं कि पाकिस्तान का आम आदमी हिन्दुस्तान के आम आदमी की तरह एक-दूसरे की सभ्यता संस्कृति, धार्मिक और सामाजिक विचारधारा तथा रीतिरिवाजों का पूरी तरह स्वागत करता है, और इसी बुनियाद पर शादमान चौक को भगत सिंह चौक नाम देने पर ज्यादातर लोगों को रत्तीभर ऐतराज नहीं था बल्कि एक खास तबके ने इस फैसले को दोनों मुल्कों के दरमियान रिश्तों में प्यार और मुहब्बत को बढ़ावा देने वाला अहम कदम बताया।

दुख की बात तो यह है कि कुछ ज़ाती मुफद रखने वाले पेशेवर मुत्अहसब सयासी लोगों ने इस खुबसूरत कदम का विरोध किया और एक दोस्ताना पहल को सिरे नहीं चढ़ने दिया। यहां यह बताना ज़रूरी होगा शादमान कॉलोनी के एक चौराहे शादमान चौक का नाम भगत सिंह चौक रखने की घोषणा भगत सिंह की पिछली जयंती 28 सितंबर 2011 को पाकिस्तान सरकार ने की थी, लेकिन अब कट्टरपंथियों के दबाव में उसे अपने कदम पीछे खींचने पड़ रहे हैं। यहां यह बताना भी प्रासंगिक होगा कि नामकरण का विरोध कर रहे संगठन जमात-उद-दावा का मुखिया वही हाफ़िज़ सईद है जिसे 26 नवंबर, 2008 के मुंबई हमले का मास्टर माइंड माना जाता है। लाहौर से भगत सिंह का नाता सिर्फ फांसी तक ही सीमित नहीं रहा है। लाला लाजपतराय की मौत का बदला लेने के लिए इसी लाहौर में भगत सिंह ने राजगुरु, बटुकेश्वर दत्त एवं चंद्रशेखर आजाद के साथ मिलकर लाहौर के सहायक पुलिस अधीकक्ष जेपी सांडर्स को गोलियों से भून दिया था। लाहौर के ही नेशनल कॉलेज में पढ़ाई करते हुए उनकी रूचि क्रांति में जगी और उन्होंने पढ़ाई छोड़कर नौजवान भारत सभा की स्थापना कर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे। उनका जन्म भी अब पाकिस्तान में जा चुके पंजाब प्रांत के लायलपुर ज़िले में हुआ था। लाहौर एवं पाकिस्तान से भगत सिंह की यादों, संबंधों, एवं दोनों देशों के संयुक्त इतिहास को खारिज करने का जो दबाव आज जमात-उद-दावा द्वारा बनाया जा रहा है उसी का परिणाम है कि पाकिस्तान के लोग आज दोनों देशों के संयुक्त स्वतंत्राता आंदोलन के शहीद अशफाकउल्ला खान के बारे में नहीं जानते। उनकी एक पूरी-पूरी पीढ़ी इस तथ्य से अनजान है कि अंग्रेजों को नाकों चने चबवाने वाली झांसी की रानी के किले पर लगी कड़क बिजली नामक तोप के तोपची गौस खान हुआ करते थे। हिन्दुस्तान के आखिरी मुगल बादशाह बहादुर शाह ज़फ़र को भी वहां सिर्फ भारत के अंतिम मुगल बादशाह के रूप में ही जाना जाता है।

कट्टरपंथियों के दबाव के बावजूद पाकिस्तान में वैकल्पिक इतिहास पर काम शुरु भी हो चुका है। इस दिशा में काम कर रहे बुद्धिजिवियों में जनाब मुबारक अली का नाम काफ़ी चर्चा में है। उनसे भी पहले हसन अली ने अपनी पुस्तक 'पाकिस्तान में संस्कृति का विकास' में कई ऐसे तथ्यों का उल्लेख किया है, जिनसे भारत अपने आपको गहराई से जुड़ा पाता है। काश ! पाकिस्तान के चंद कट्टरपंथी, अपने ही देश के हसन अली एवं मुबारक अली को पढ़ पाते। क्या यह सोचने की बात नहीं है कि संयुक्त स्वतंत्रता आंदोलन के जिन शहीदों को पाकिस्तान के कट्टरपंथी, हिंदू-मुस्लिम का चश्मा लगाकर खरिज कर रहे हैं, यदि वे न होते तो क्या आज पाकिस्तान और भारत का भी अस्तित्व होता? बहरहाल भगत सिंह चौराहे का रद्द होना एक ऐसी घटना है जिस पर यकीनन दोस्ती, मुहब्बत, पड़ोस, कुरबानी, शहादत और दरयादिली जैसे लफ़्ज़ों पर यकीन रखने वाले हिन्दुस्तानी या पाकिस्तानी आवाम का एक अलग सकारात्मक नज़रिया होगा जबकि कट्टर, मुत्तअहसब, फिरकापरस्त और खुदगर्ज़ लोगों के ख्याल इनसे बिल्कुल जुदा और इन्सानी कीमतों की खिलाफ्त से लबरेज़ होंगे। हिन्दुस्तान का आम आदमी पाकिस्तानी आवाम के जज़्बे और अहसास का पूरी तरह से अहतराम करता है, जिन्होंने शादमान चौक को शहीद भगत सिंह नाम देने की पेशकश को सिर-आँखों पर लिया। मुट्ठी भर कट्टरपंथियों और गैर इन्सानी ताकतों की मुख़ालफत, हज़ारों लोंगों के दिलों से निकले हुए मुहब्बत के पैगाम को बेमायना और बेअसर नहीं कर सकते। सरहद के इस पार से हम न सिर्फ़ इन्सानियत से मुहब्बत करने वाले करोड़ों दिलों को मुबारकबाद देते हैं बल्कि सरहद के दोनों तरफ सरगरम मुत्तअसब फ़िरकापरस्तों के विरोध में बढ़-चढ़ कर आवाज़ बुलंद करने और उनकी मुसलसल-मुखालफ्त करने का अहद करते हैं।

'वर्तमान के श्रेष्ठतम कवि हैं बलदेव वंशी' –डॉ. रमेश कुंतल मेघ

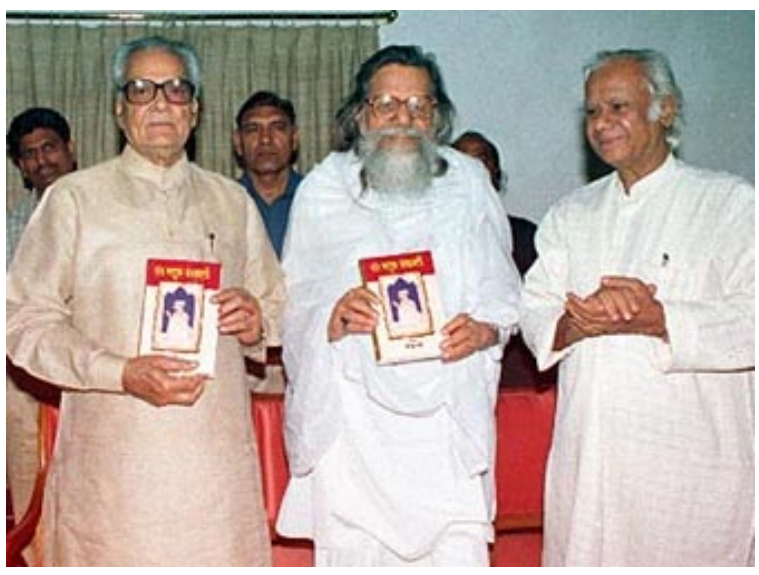

साहित्य अकादमी रविन्द्र भवन में देश के प्रमुख कवियों, कथाकारों और आलोचकों से खचाखच भरे सभागार में साहित्य जगत के प्रख्यात आलोचक साहित्यकार डॉ. रमेश कुंतल मेघ ने किताबघर द्वारा तीन खण्डों में प्रकाशित डा. बलदेव वंशी के कविता समग्र का विमोचन किया। श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर डा. मेघ ने हिन्दी कविता के वर्तमान मापदंडों, लक्ष्यों, मूल्यों एवं परंपरागत परिपाटियों का उल्लेख करते हुए बलदेव वंशी की अद्भुत क्षमताओं और विषयों की विविधता के आधार पर श्री वंशी को सब से अलग और छाप छोड़ने वाले कवि का दर्जा प्रदान किया। आगे बोलते हुए डा. मेघ ने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं कि भारतीय कविता जगत में हमारे पुरोधा कवियों ने बहुत ऊंचे और प्रभावशाली मापदंड स्थापित किये हैं, जिनके परिणाम-स्वरूप एक लंबे काल से कविता की रचना लगभग उन्हीं मापदंडों को ध्यान में रख कर की जा रही है। डॉ. बलदेव वंशी ने, न केवल शब्दों और भावों को एक अद्भुत बुलंदी प्रदान की बल्कि सामान्य जीवन से जुड़ी कविता को आत्म-अध्यात्म और प्रकृति से सीधे जोड़ कर नये अर्थ प्रदान किये। सबसे आकर्षक बात यह है कि आपने सूक्ष्म एवं दुर्लभ विषयों को सरल ढ़ंग से प्रस्तुत करके सामान्य जन के मनस-पटल तक पहुंचाने में सफलता प्राप्त की है। सोलह काव्य-संग्रहों, छः लंबी कविताओं एवं एक-सौ से अधिक पुस्तकों के प्रबुद्ध रचनाकार बलदेव वंशी सम्पूर्ण साहित्य जगत के सम्मान के अधिकारी हो गये हैं।

बारह-सौ पृष्ठों और तीन खंडों में प्रकाशित 'बलदेव वंशी कविता समग्र' के संपादक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल ने अपने वकतव्य में कहा कि बलदेव वंशी 'कविता समग्र' जैसे संवेदनशील कार्य को स्वीकार करना ही उनके तथा उनकी कविताओं के प्रति मेरे अथाह सम्मान एवं विश्वास का द्योतक है।

समारोह में प्रख्यात कथाकार डॉ. महीप सिंह, प्रसिद्ध आलोचक डॉ. हरदयाल, राजेंद्र उपाध्याय तथा बलराम ने अपने-अपने शब्दों में बलदेव वंशी की कविताओं में व्याप्त विशेषता, भिन्नता, सूक्ष्मता और गहन वैचारिकता पर अपने विचार व्यक्त किये। दूरदर्शन की एक जानी-मानी हस्ती डॉ. अमर नाथ 'अमर' ने अपनी चिरपरिचित शैली में संचालन करके अति विशिष्ट श्रोताओं से सराहना प्राप्त की।

समारोह में सर्वश्री प्रभाकर श्रोत्रिय, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, मीरा सीकरी, मंजु गुप्ता, डॉ. नरेन्द्र मोहन, बल्लभ डोभाल, डॉ. वीरेंद्र सक्सेना, डॉ. बृजेंद्र त्रिपाठी, डॉ. उपेंद्र रैणा, डॉ. रणजीत साहा, शरद दत्त, अनिल जोशी, कमल कुमार, नरेश शांडिल्य, अतुल प्रभाकर, ज्योति संग, हरेराम समीप, आशमा कौल, डॉ. शुभ तनेजा, डॉ. गुरुचरण सिंह, सुरेश ढींगरा, डॉ. अश्विनी पराशर, डॉ. उमाशशि दुर्गा, माधुरी मिश्रा, नमिता राकेश, श्री कौशल, श्री राजकुमार गौतम, श्री सत्यव्रत, सुश्री शलभ, प्रसून लतान्त, प्रताप सहगल, ललित लालित्य, डॉ. सुभाष चंद्र, पवन माथुर, ओम प्रकाश ठाकुर एवं कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।